आर्थिक विकास में कृषि क्षेत्र का योगदान

डॉ0 अर्चना मिश्रा

भारत एक कृषि प्रधान देश है, देश की अधिकांश जनसंख्या की आजीविका का साधन कृषि व्यवसाय है। राष्ट्रीय आय के उत्पादन, रोजगार, जीवन यापन कृषि भारत का महत्वपूर्ण व्यवसाय है, परन्तु कृषि क्षेत्र आज पिछड़ी अवस्था में चल रहा है यह अत्यन्त शोचनीय तथ्य है। सामन्ती उत्पादन सम्बन्धों के कारण जहां एक ओर थोड़े से जमींदारों ने कृषकों एवं खेतिहर मजदूरों का भारी शोषण कर सम्पन्न जीवन व्यतीत किया वहीं साधारण कृषकों को भारी परिश्रम के बाद भी न्यनूतम जीवन स्तर प्राप्त नहीं हो सका। बढ़ती हुयी जनसंख्या का कृषि क्षेत्र से अन्य क्षेत्रों में स्थानान्तरण न होने से भूमि पर जनसंख्या का भार बढ़ता गया और इससे बेकारी में और वृद्धि होती गयी।

भारत में दीर्घकाल से ही कृषि केवल कृषकों एवं खेतिहर मजदूरों की जीविका का साधन रही है। स्वतंत्रता के पश्चात् देश में आर्थिक विकास का औद्योगिक प्रयास किया गया तथा ब्रिटिश शासन काल में क्षतिग्रस्त हुयी देश की औद्योगिक एवं व्यापारिक संरचना को व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया जिसके फलस्वरूप देश में कच्चे माल एवं आधार भूत मशीनरी आदि के आयात में भारी वृद्धि हुयी। ''भारत गांवो का देश है यहां की लगभग 64 प्रतिशत आबादी आज भी कृषि पर निर्भर है। इसके पश्चात् भी कृषि की दशा संतोषजनक नहीं है। इसका मुख्य कारण है कि कृषि क्षेत्र से जुड़े लोगों की शिक्षा का स्तर सही नहीं है।'' 1 वे अधिकांशतः अशिक्षित है तथा आधुनिक तकनीक एवं संसाधन विहीन लोग हैं जिसके कारण वे भारी मात्रा में उत्पादन नहीं कर पाते। अशिक्षा के चलते कृषि क्षेत्र की बारीकियों को समझ नहीं पाते परिणाम स्वरूप वे आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं हो पा रहे है जिसका असर ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था के साथ–साथ राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर भी पड़ रहा है।

आज भी कृषि क्षेत्र में मूलभूत सुविधाओं का अभाव है तथा इन अभावों से औसत किसान त्रस्त है। ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की समस्या होनों के कारण प्रतिवर्ष सैकड़ों ऐकड़ खेती योग्य भूमि अभिसिंचित रह जाती है। कृषि क्षेत्रों में किसानों के परिवार बढ़ने के कारण उनकी कृषि योग्य भूमि छोटे–छोटे हिस्सों में बंटती चली जा रही है, जिसका प्रभाव कृषि क्षेत्र की उत्पादकता पर भी पड़ रहा है तथा पूंजीनिवेश भी नहीं हो पा रहा है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। इसे भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की संज्ञा दी जाती है। ऐसा होने के लिये सबसे महत्व की बात इस पर आजीविका के लिये निर्भर लोगों की मात्रा से प्रमाणित होती है। कृषि क्षेत्र देश की पूरी श्रम शक्ति के लगभग 52% को रोजगार प्रदान करती है। 2

राष्ट्रीय आय का बढ़ा भाग कृषि क्षेत्र से उत्पादित होता है अतः पिछड़े देशों के आर्थिक विकास में कृषि क्षेत्र का योगदान महत्वपूर्ण होना स्वभाविक है। ''कृषि ऐसी जीवन पद्धति परम्परा है जिसने भारत के लोगों के विचार, दृष्टिकोण, संस्कृति और आर्थिक जीवन को पुरातन काल से संवारा है। भारतीय आयोजन में कृषि को सभी सामाजिक, आर्थिक विकास की सभी कार्य नीतियों का केन्द्र बिन्दु माना गया है। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किये महत्वपूर्ण कार्य और किसानों के प्रयासों से साठ के दशक में कृषि क्षेत्र में शानदार सफलता प्राप्त करनें में मदद मिली थी जिसे ''हरित क्रान्ति'' के रूप में प्रमुखता से जाना गया।'' 3 कृषि विकास का स्तर ऊँचा उठाकर खाद्य पदार्थ में आत्मनिर्भरता को प्राप्त किया जा सकता है। कृषि में बढ़ती हुयी उत्पादकता से औद्योगिक विकास में भी अनेक प्रकार से सहायता मिलती है। आज कृषि क्षेत्रों का योगदान विभिन्न क्षेत्रों में निम्ननलिखित है–

1. राष्ट्रीय आय में योगदान– राष्ट्रीय आये में कृषि क्षेत्र का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व राष्ट्रीय आय में कृषि क्षेत्र का योगदान लगभग 57 प्रतिशत से अधिक था स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय आय में कृषि क्षेत्र का योगदान धीरे–धीरे कम होता चला जा रहा है फिर भी राष्ट्रीय आय में कृषि क्षेत्र का योगदान आज भी अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक है।

राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान तालिका

वर्ष	कुल आय में कृषि का योगदान
1950–51	56.1%
1960–61	53.9%

1970–71	47.4%
1980–81	40.6%
1990–91	32.9%
1995–96	30.6%
2000–02	26.10%
2011–12	13.90%

(स्त्रोतः आर्थिक समीक्षा 2012–13)

उपरोक्त तलिका का स्त्रोत 'आर्थिक समीक्षा 2012–13' है। अतः इससे स्पष्ट है कि कृल राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान 1950–51 में 56.1% था वही पचास वर्षों के उपरान्त 2000–02 में 26.10% ही रह गया जबकि 2011–12 में यह योगदान घटकर 13.90% हो गया।

2. रोजगार में योगदान– भारत में कृषि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अधिकांश जनसंख्या के जीवन यापन का साधन रही है। लगभग 58% देश की कार्यशील जनसंख्या प्रत्यक्ष रूप से कृषि व्यवसाय में लगी है इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से लोग कृषि पदार्थों के व्यापार, परिवहन आदि में लगकर अपनी आजीविका कमाते है। इस प्रकार अन्य सब व्यवसाय मिलकर भी रोजगार की दृष्टि से बहुत पीछे है।

''वर्ष 1951 में कुल मुख्य श्रमिकों का लगभग 70% भाग कृषि तथा उससे सम्बद्ध क्रियाओं में संलग्न था जबकि वर्ष 2001 में इस अनुपात में गिरावट आयी और यह लगभग 58% हो गया। कुल रूप में कृषि द्वारा 23.5 करोड़ व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराया गया था। यह तथ्य निराशजनक है कि 1951 से 2001 के दौरान कृषि श्रमिकों के अनुपात में वृद्धि हो हुयी। यह 20% से बढ़कर 27% हो गया इसके विपरीत कृषकों की मात्रा 50% से घटकर 32% हो गयी।'' 5

3. औद्योगिक विकास में योगदान– भारत में कृषि से उद्योग धन्धों के लिये कच्चा माल प्राप्त होता है। सूती वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, वनस्पति उद्योग आदि सीधे ही कृषि पर निर्भर है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य उद्योग अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य उद्योग अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है जैसे–हथरकरघा, चावल, दाल मीलें, तेल उद्योग आदि। बहुत से लघु कुटीर उद्योगों को कृषि से कच्चा माल प्राप्त होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कृषि क्षेत्र विभिन्न उद्योगों के अस्तित्व एवं विकास का आधार है। उद्योगों में काम करने वाले श्रमिकों को खाद्यान्न की आपूर्ति भी कृषि करती है। भारतीय कारखानों में काम करने वाले मजदूर अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्रों के है। औद्योगिक विकास कृषि पर निर्भर होने के कारण यह कहा जा सकता है कि औद्योगिक विकास में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है।

4. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में योगदान– विदेशी व्यापार की दृष्टि से भारतीय कृषि का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यहां के निर्यातों में लगभग दो तिहाई कृषि उत्पादित पदार्थ या कृषि पदार्थों द्वारा निर्मित वस्तुयें जैसे–चाय, काफी, जूट, सूती वस्त्र, खली, काजू, तम्बाकू, चीनी, चमड़ा आदि है। इस प्रकार निर्यात में कृषि जन्य वस्तुओं का योगदान उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। इसके निर्यात से विदशी मुद्रा प्राप्त होगी जिससे हम औद्योगिक विकास के लिये पूंजीगत माल को वित्त पोषित कर सकते है।

5. खाद्यान्न आपूर्ति में योगदान– भारतीय कृषि क्षेत्र देश की समस्त जनसंख्या के लिये खाद्यान्नों की आपूर्ति करता है। बढ़ती हुयी जनसंख्या के परिप्रेक्ष्य में कृषि क्षेत्र पर खाद्यान्न आपूर्ति का दायित्व बढ़ता जा रहा है। आर्थिक प्रगति के साथ–साथ जनसंख्या की भोजन आवश्यकता में गुणात्मक परिवर्तन हो रहा है। इस कारण अधिक पौष्टिक खाद्यान्नों की आपूर्ति का दायित्व भी कृषि क्षेत्र पर है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि एवं उद्योग दो महत्वपूर्ण पहलू हैं इनमें से किसी एक को अलग करके दूसरे का समग्र विकास नहीं किया जा सकता है। कृषि क्षेत्र औद्योगिक क्षेत्र के केवल खाद्यान्न आपूर्ति एवं श्रम ही नहीं उपलब्ध कराता बल्कि कई अन्य रूपों में औद्योगिक क्षेत्र की पूर्ति करता है। इस प्रकार औद्योगिक क्षेत्र को भी कृषि

क्षेत्र के ऊपर निर्भर रहना पड़ता है। कृषि एवं उद्योग के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध व निर्भरता है। अतः आर्थिक विकास के लिये कृषि एवं उद्योग का विकास आवश्यक है।

भारतीय कृषि की समस्या

भारत में कृषि की प्रमुख समस्या उत्पादन एवं उत्पादक में कमी है। हम अपनी आवश्यकता के अनुपात में भी उत्पादन नहीं कर पाते। चिन्तकों के अनुसार जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति के लिये कृषि क्षेत्र में प्रति वर्ष 4% की दर से वृद्धि होनी चाहिये।

भारत में में कृषि की निम्न उत्पादकता के कुछ महत्वपूर्ण कारण है–

1) भारतीय कृषक कृषि को व्यवसाय नहीं समझता है साधारणतया यह उसके लिये मात्र जीविकोपार्जन का साधन है। यह कृषि कार्य सिर्फ अपने लिये करता है। यदि कृषक कृषि कार्य को लाभ के दृष्टिकोण से करे तो उत्पादन व उत्पादकता दोनों में निश्चित रूप से वृद्धि सम्भव है।
2) भारत में 80% किसान 'सीमान्त किसान' व भूमिहीन किसान की श्रेणी में आते हैं।
3) यहाँ जमीन का वितरण खण्डित है खेतों के छोटे–छोटे होने के कारण उन पर वैज्ञानिक ढंग से खेती करना कठिन हो जाता है।
4) 60% जमीन वर्षा पर आधारित होती है। सारे प्रयासों के उपरान्त भी सम्पूर्ण कृषि को सिंचाई के अन्तर्गत नहीं लाया जा सकता है। इसी कारण कृषि को मानसून का जुआ कहा जाता है।

कृषि क्षेत्र में अनुसन्धान की कमी है। कौन–सी जमीन, कौन सा क्षेत्र किस कृषि विशेष फसल के लिये उपयुक्त है इस क्षेत्र में सरकार द्वारा प्रयास नहीं किया गया।

आर्थिक विकास का सुझाव

यह हम चाहते कि हमारा देश आर्थिक रूप से सम्पन्न हो तो कृषि में प्रति ऐकड़ उत्पादकता बढ़ानी होगी तथा कृषि में लगे लोगों की संख्या घटानी होगी। इन लोगों को उद्योगों में लगाकर इनके रहन–सहन को ऊँचा उठाया जा सकता है।

कृषि के विकास के लिये आधुनिक ढंग की ऐसी तकनीक अपनाने की आवश्यकता है जो देश के लाखों करोड़ों किसानों तक पहुंचायी जाये। जिससे कृषक नवीन तकनीक के माध्यम से खाद्यान्न उत्पादन में भारी वृद्धि कर सके।

अन्य उद्योगों की तरह कृषि में भी साज सामान की आवश्यकता पड़ती है जैसे खाद, उत्तम बीज, पानी एवं अन्य आधुनिक उपकरण। कृषि विकास के लिये हमें इन साधनों की मात्रा एवं गुण की ओर पर्याप्त ध्यान देना होगा। हमें ऐसी व्यवस्था अपनानी होगी जिससे उन्नत किस्म के बीज, खाद, कृषि उपकरण, सिंचाई के साधन आदि पर्याप्त मात्रा में ठीक समय पर उपलब्ध हो सके। यह व्यवस्था जितनी कुशल होगी उतनी ही उत्पादन एवं उत्पादित वस्तुओं में वृद्धि करना सम्भव होगा।

कृषि विकास के लिये उन्नत किस्म के बीज, खाद, कृषि उपकरण आदि से किसान तभी लाभ उठा सकेंगे जब उनकी प्राप्ति के लिये देश के प्रत्येक भाग में सरकारी संस्थायें खोली जायें।

गांवों में आधुनिक बैंको, सरकारी ऋण समितियों एवं ग्रामीण बैंको की स्थापना करके कृषकों से सहायता प्रदान की जा सकती है। कृषि वित्त व उपकरण उन किसानों को मिल पाते है जो बड़े व मध्य श्रेणी के होते है अत्यन्त गरीब किसान नवीन तकनीक से लाभ नहीं उठा पाते इसलिये यह आवश्यक है कि अत्यन्त गरीब किसानों को सहकारिता के आधार पर कृषि उपकरणों की पूर्ति की व्यवस्था की जाये।

कृषि को लाभ पूर्ण व्यवसाय में परिवर्तित करने के लिये कृषि पर आश्रित जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार हेतु देश के प्रमुख व्यवसाय कृषि में तकनीक सुधारों को लाभप्रद बनाये रखने के लिये निरन्तर शोध कार्यक्रमों को जारी रखा जाये।

स्वतन्त्रता के 66 वर्षों के नियोजन के पश्चात् भी अधिकांश कृषि भूमि असिंचित है तथा हमारी कृषि प्रकृति पर निर्भर है। कृषि विकास के समस्त प्रयास प्रतिकूल मानसून के कारण चरमरा जाते है। अतः ऐसे बीजों के शोध की आवश्यकता है जो प्रतिकूल मौसम में भी उपज दे सकें।

अंततः स्पष्ट है कि यदि इन महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर थोड़ा ध्यान दिया जाये तो देश को आर्थिक रूप से सम्पन्न बनाया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची:–

1. *भारतीय कृषि व्यवस्था।*
2. *भारतीय, अर्थव्यवस्था।*

3. भारतीय, अर्थव्यवस्था।
4- भारतीय, आर्थिक समीक्षा 2012–13
5. प्रतियोगिता दर्पण 2006
6. कुरूक्षेत्र पत्रिका अक्टूबर अंक 2013